हरिद्वार का अर्ध कुम्भ मेला

सर्वप्रथम हरिद्वार के कुम्भ मेले पर 12 मार्च 1867 ई. में युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहरा कर पाखण्ड उन्मूलन के अपने संकल्प को प्रकट किया था। वेद विरुद्ध मत सम्प्रदायों एवं धर्म के तथाकथित ठेकेदारों को इस अवसर पर दी गई उनकी जबरदस्त शास्त्रार्थ की चुनौती से पौराणिक मण्डल में हड़कम्प मच गया था। ऋषिवर द्वारा स्थापित इस परम्परा को पुनर्जीवित करने का संकल्प लेकर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हर कुम्भ अवसर पर अपना वेद-प्रचार शिविर हरिद्वार में लगाती रही है। इसने अपना पहला शिविर सन् 1986 में लगाया था। यह शिविर साठ साल के अन्तराल के बाद लगा था क्योंकि पौराणिक ऐसा शिविर लगाने नहीं देते थे। इस प्रकार जिस कार्य को प्रांतीय सभाएँ व सार्वदेशिक सभा अंजाम नहीं दे सकी उसे परिषद् ने संघर्ष के बलपर करके दिखा दिया। शुरू-शुरू में हरिद्वार के पौराणिकों ने इसका भी विरोध किया लेकिन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ने अपने शिविर को ऐसा स्वरूप प्रदान किया कि पौराणिकों ने विरोध करना छोड़ दिया। स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी के अपने व्यक्तित्व ने भी पौराणिकों को इस मुद्रा में आने के लिए विवश किया। उन्होंने पौराणिक धर्माचार्यों को अपने शिविर में सादर आमंत्रित कर धर्म चर्चा की और धर्म को समाज सापेक्ष बनाने पर इस चर्चा में बल दिया। इससे वे न केवल सहमत हुए बल्कि दिल्ली में सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित करने में सहयोग देने को भी तैयार हो गये। टकराव की बजाय पारस्परिक संवाद से ही हम एक दूसरे को समझ सकते हैं, एक दूसरे के निकट आ सकते हैं इस दृष्टि से इन वेद प्रचार शिविरों को खूब लोकप्रियता मिली। यहां तक कि शंकराचार्यों ने भी इन शिविरों में आने में संकोच नहीं किया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ने ऐसा ही एक वेद-प्रचार शिविर 12 मार्च से 14 अप्रैल 2004 तक हरिद्वार में अर्ध कुम्भ मेले के अवसर पर आयोजित किया।

मार्च 2004 के इस वेद प्रचार शिविर के लिए स्वामी इन्द्रवेश जी का आशीर्वाद और स्वामी अग्निवेश जी का मार्गदर्शन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् को सदैव की भांति मिला। शिविर व्यवस्था में इस बार आई बाधाओं को दूर करते हुए परिषद् की पंजाब शाखा ने इसका गुरुतर भार अपने ऊपर लिया। आर्य महिला परिषद् पंजाब की प्रधाना एवं महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर की मुख्य स्तम्भ माता जगदीश आर्या के अथक प्रयास, अमृतसर के आर्य नेता श्री ओमप्रकाश आर्य के कुशल संयोजन एवं परिषद् की पंजाब शाखा के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री ब्रजेन्द्र मोहन भण्डारी, श्री तरसेम लाल आर्य, डॉ. कुन्दनलाल पाल व श्री गुलाब सिंह आर्य के विशेष सहयोग से पंजाब भर में शिविर के लिए विशेष आकर्षण उत्पन्न हुआ। पंजाब की ओर से इस बार न केवल विशेष आर्थिक सहयोग मिला बल्कि शिविर में लगातार तीन-चार दिन तक सभी प्रमुख नेतागण व कार्यकर्ता जमे रहे, उत्साहवर्द्धन करते रहे। शिविर में यज्ञ संचालन का मुख्य दायित्व आर्य विदुषी साध्वी डॉ. प्राची आर्या ने ब्रह्मा के रूप में सम्भाला। व्यवस्था का दायित्व डॉ. वीरन्द्र सिंह पंवार ने संभाला। सर्वश्री विरजानन्द, जयवीर व्यायामाचार्य, ब्र. रामफल ने भी सक्रियता से प्रबन्धन में भागीदारी निभाई। स्वामी विशुद्धानन्द (उड़ीसा), स्वामी ओमवेश (बिजनौर), स्वामी सोमवेश (छींटावाल, पटियाला), वानप्रस्थ सूरजमुनि (गोहाना) आदि महात्माओं ने अपनी नियमित उपस्थिति से शिविर की शोभा बढ़ाई। सर्वश्री आचार्य यशोवर्धन योगी, ताराचन्द आर्य (गामडी), जानकी प्रसाद आर्य (बरेली), अरुण कुमार (अमृतसर), अशोक बजाज (अमृतसर), डॉ. वीरेन्द्र आर्य (हरिद्वार), डॉ. राजेश आर्या (खेड़ा मस्तान), गुलाब सिंह आर्य (पटियाला) आदि महानुभावों ने यजमान बन कर यजुर्वेद पारायण यज्ञ को सफल बनाया। सर्वश्री रामेश्वर ढाका, स्वामी धर्मार्थी, चन्द्रपाल मलिक, कु. सुभद्रा योगभारती, कु. प्रतिभा आर्या, कु. निक्की, श्रीमती ममता आर्या, प्रिं. शकुन्तला शर्मा (राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित), नवीन, वेदानन्द आर्य, विनोद आदि ने पूरा समय देकर शिविर व्यवस्था में प्रशंसनीय योगदान दिया।

10-11 अप्रैल को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का साधारण अधिवेशन एवं विशिष्ट आर्य नेताओं की महत्वपूर्ण विचार गोष्ठी सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री सत्यव्रत सामवेदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। श्री रामसिंह आर्य (जोधपुर) की देख-रेख में परिषद् का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। परिषद् के मन्त्री श्री बिरजानन्द (बहरोड) ने गत तीन वर्षों का आय-व्यय विवरण और परिषद् की गतिविधियों का उल्लेख किया जिसकी सर्वसम्मति से पुष्टि की गई।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के साधारण अधिवेशन को सम्बोधित करने के लिए स्वामी अग्निवेश जी और स्वामी ओमवेश जी विशेष रूप से शिविर में पधारे। स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी यतीश्वरानन्द जी, श्री रामसिंह आर्य (अधिष्ठाता आर्य वीर दल, राजस्थान), श्री रामधारी शास्त्री (रामवेश, जीन्द), श्री सम्भाजी राव पंवार (महाराष्ट्र), श्री ओम प्रकाश आर्य (अमृतसर) श्री वेदप्रकाश आर्य (दीनानगर), प्रिं. आजाद सिंह (सोनीपत) आदि ने भी अपने विचार रखे।

स्वामी अग्निवेश जी ने अपने सम्बोधन में युवकों का आह्वान किया कि वे जातिवादी जुनून और साम्प्रदायिक सोच को मिटाने के लिये आगे आयें। अन्तर्जातीय विवाह जातिवाद के उन्मूलन में परम सहायक है अतः इसे प्रोत्साहन दें। देश में धर्म के नाम पर फैल रहे पाखण्ड और अंधविश्वास को दूर करने में युवा शक्ति अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। स्वामी ओमवेश जी ने अपने सम्बोधन में परिषद् की गतिविधियों को और अधिक व्यापक स्तर पर अंजाम देने का आह्वान किया। उन्होंने वेद प्रचार शिविर के लिए दस हजार रुपये का आर्थिक सहयोग भी दिया। माता ज्योतिर्मयी वानप्रस्थ ने भी दस हजार रुपये का सात्विक दान दिया। दर्शन सिंह व जयकिशन आर्य ने आर्य युवक परिषद् कैथल की ओर से पाँच हजार रुपये का सहयोग दिया। कैप्टन रुद्रसेन और माता लीलावती का विशेष आर्थिक सहयोग भी मिला। श्री सत्यव्रत जी सामवेदी ने आर्य समाज के भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत कर आर्य युवकों को इसके लिए संकल्पबद्ध होने की प्रेरणा दी। अधिवेशन में विशेष रूप से हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, राजस्थान उत्तरांचल के युवकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

इस अवसर पर सर्वश्री तरसेम लाल आर्य (बरनाला), रामेश्वरदास (होशंगाबाद), प्रिं. आजाद सिंह (सोनीपत), जयकिशन शर्मा (कैथल), कर्मपाल आर्य (जीन्द), डॉ. प्राची आर्या (हरिद्वार), कु. सुभद्रा (बरेली), ब्र. सहन्सरपाल आर्य (मुजफ्फर नगर), मा. मनोचा खण्डेलवाल (तिगरी शुक्रताल) आदि को अंग वस्त्र भेंट कर स्वामी अग्निवेश जी ने सम्मानित किया।

वेद प्रचार शिविर में योगाचार्य हरपाल शास्त्री के निर्देशन में योग साधना शिविर का संचालन प्रतिदिन होता रहा, पाखण्ड-खण्डन और वैदिक सिद्धान्त मण्डन पर सम्मेलन आयोजित किये गये, विचार गोष्ठियों का आयोजन नियमित रूप से होता रहा। श्री जगवीर सिंह जी को परिषद् प्रधान के रूप में सदा की भाँति अग्रणी भूमिका रही।

यह पहला अवसर था कि स्वामी इन्द्रवेश जी चाह कर भी अपनी अस्वस्थता के कारण इस वेद प्रचार शिविर में नहीं पधार सके। लेकिन उनकी प्रेरणा, सद्भावना और आशीर्वाद आयोजकों को निरन्तर मिलता रहा। कुम्भ अवसर पर शिविर लगाने की परम्परा मूलतः उन्होंने ही शुरू कराई थी।